खंड-एक

सत्यजित राय
का अपूर्व संसार

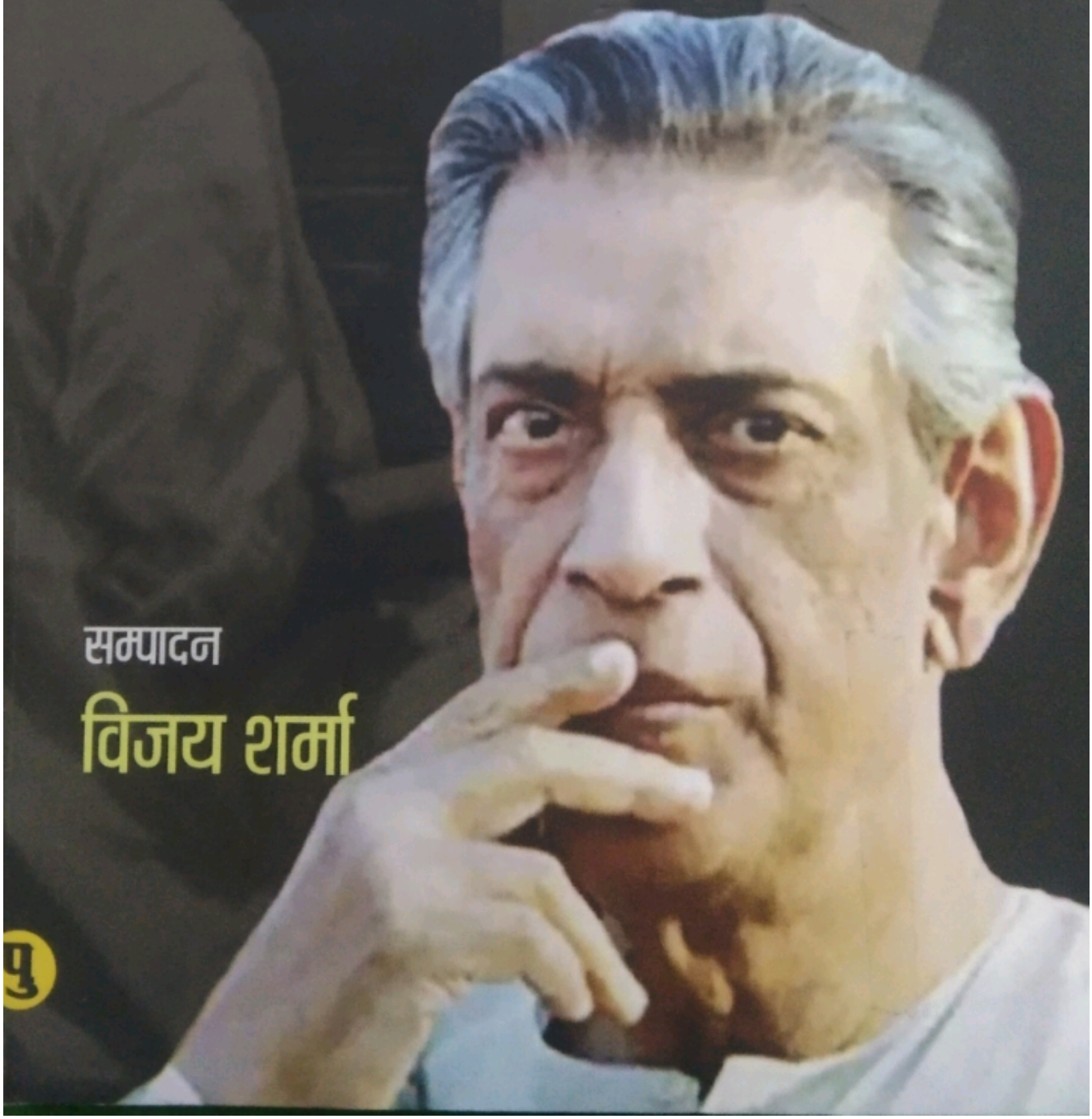

सम्पादन
विजय शर्मा

प्रतिलिप्याधिकार लेखक/अनुवादक/संपादक के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके यथा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना वितरित नहीं किया जा सकता है। लेखक/अनुवादक/संपादक ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों और विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। अनुमति के लिए सभी अनुरोधों को लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, संपादक, लेखक, अनुवादक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं है। सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र केवल गाजियाबाद होगा।

Collabration with Swapan Publications

ISBN : 978-81-949941-8-3

सत्यजित राय का अपूर्व संसार-1

(सिनेमा)

संपादन : विजय शर्मा

©संपादक

मुद्रक : मणिपाल टेक्नोलॉजीज लिमिटेड

आवरण : महेश्वर

प्रकाशक

पुस्तकनामा

डी-77/ एसएफ-202, शौर्यपुरम, नजदीक जिन्दल पब्लिक स्कूल

एनएच-24, बम्हेटा, पोस्ट-कविनगर, गाजियाबाद 201002 (उ.प्र.)

ईमेल : info@pustaknama.com

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹450

Satyajit Ray Ka Apoorv Sansar-1

(Cinema)

edited by Vijay Sharma

www.pustaknaamaa.com

www.swapanpublications.com

अनुक्रम

आभार 7

अपनी बात 11

फीचर फ़िल्म-शॉर्ट फ़िल्म

पथेर पांचाली : उपन्यास और फ़िल्म : मनमोहन चड्ढा 55

पथेर पांचाली : फिर से : प्रयाग शुक्ल 64

पथेर पांचालीः कुछ बेतरतीब नोट्स : विपिन शर्मा 69

अपराजितोः जीवन संघर्ष की अनंत गाथा : नेहा तिवारी 76

पारस पत्थर, सत्यजित राय का : प्रमोद कुमार बर्णवाल 91

जलसाघरः गीत-संगीत और नृत्य का उत्तम संयोजन : रश्मि 101

अपुर संसारः अपु त्रयी की अभिन्न कड़ी : कनक लता ऋद्धि 110

देवीः मानवता के साथ अपराध : शेखर मल्लिक 119

समाप्तिः सेल्यूलाइड पर विशुद्ध जादूई यात्रा : सत्य चैतन्य 131

तीन कन्याः स्त्री जीवन के तीन पड़ाव : प्रज्ञा 151

कंचनजंघाः अंतरंग और गीतात्मक प्रस्तुति : आभा विश्वकर्मा 167

अभिजानः हसरत और जमीर के बीच टकराहट : शशांक दुबे 175

महानगरः औरत के आत्मसम्मान का
अवतरण : अखिलेश्वर पाण्डेय 180

चारुलताः 'कोलाहल कलह में मैं हृदय की
बात रे मन' : आशीष कुमार 190

टूः बच्चों की आँखों से देखी पूरी दुनिया : अनघा मारीषा 197

अपराजितो

जीवन संघर्ष की अनंत गाथा

नेहा तिवारी

'मेरी दिलचस्पी इंसानों में है। उनके चरित्र में, उन चरित्रों के आपसी सम्बन्धों के ताने-बाने में है, यह मुझे सहज ही आकर्षित करता है।'

-सत्यजित राय 'अवर फ़िल्म देयर फ़िल्म'

विश्व के महानतम निर्देशकों मे से एक सत्यजित राय की यह स्वीकारोक्ति उनकी फ़िल्मों की पृष्ठभूमि, पात्रों का चरित्र गठन और प्रस्तुति शैली सभी का सटीक आकलन करने के लिए पर्याप्त है। मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ फ़िल्मों का निर्माण करने वाले राय इसीलिए हमेशा देखें और सराहे जाते रहे हैं और रहेंगे क्योंकि काल सामाजिक, राजनीतिक, अर्थव्यवस्था पर तो हावी हो सकता है पर मानवता पर कभी नहीं। मानवता कालजयी और सर्वप्रिय होती है और राय की फ़िल्में मानव और मानवता का शंखनाद करती हैं। और इस बात पर शायद ही किसी का मतभेद हो कि 'पथेर पंचाली', 'अपराजितो' और 'अपुर संसार' के रूप में तीन अद्भुत सिनेमा देकर सत्यजित राय ने ना सिर्फ भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया है बल्कि विश्व सिनेमा के खजाने में भी ऐसे अनमोल मोती सजाएँ हैं जिनसे सारा फ़िल्म संसार सुशोभित हो रहा है। स्थानीय संस्कृति में रची बसी इन फ़िल्मों के सार्वभौमिक संदेश ने इन तीनों फ़िल्मों को अमूल्य बना दिया है।

बंगाल के सुप्रसिद्ध लेखक बिभूतिभूषण बैनर्जी का उपन्यास जब क्रमबद्ध शृंखला में एक बंगाली पत्रिका में छप रहा था तब किसे अनुमान था कि विज्ञापन और प्रिंटिंग की दुनिया में मशहूर और मशगूल सत्यजित राय के